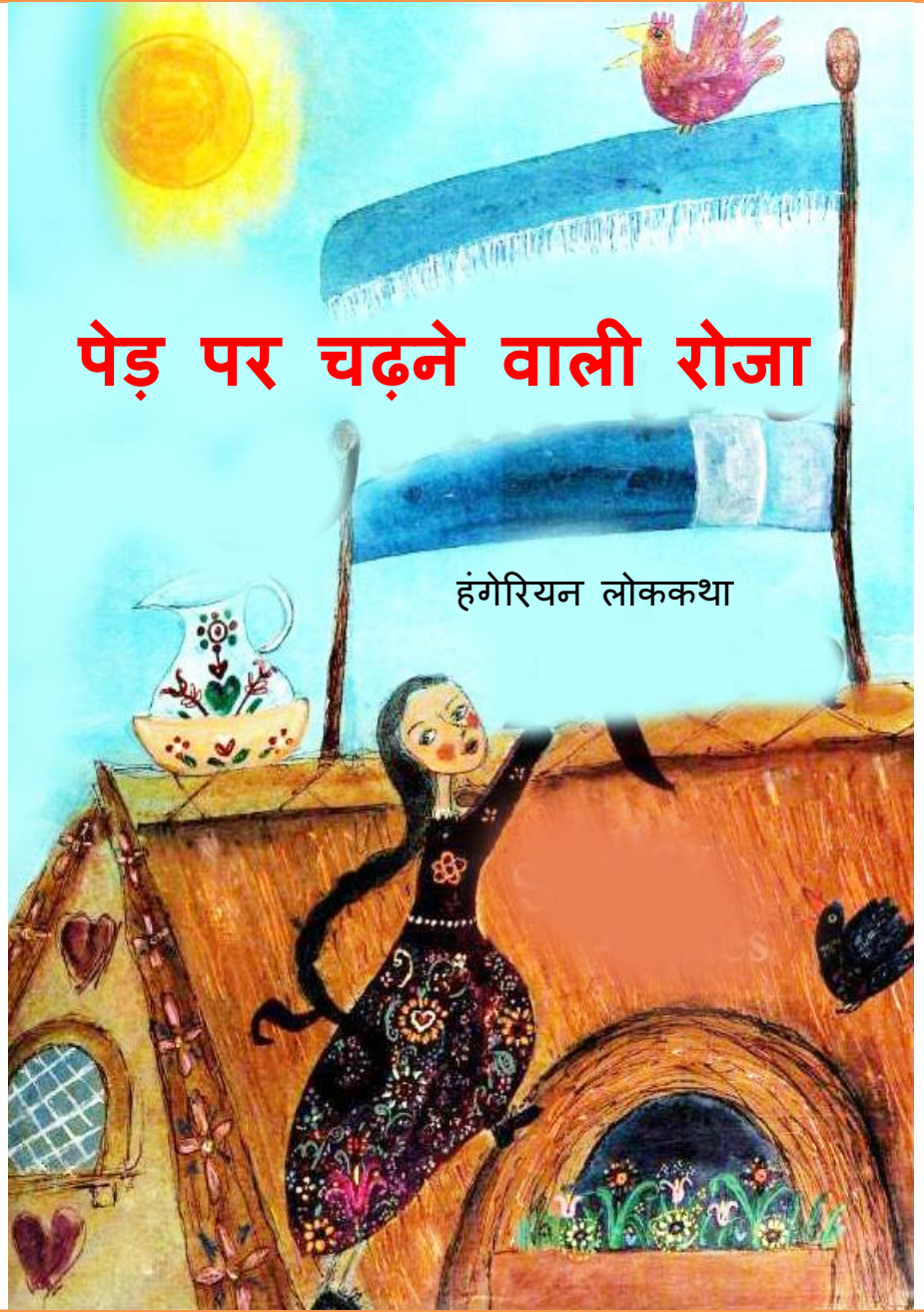
पेड़ पर चढ़ने वाली रोजा
हंगेरियन लोककथा

पेड़ पर चढ़ने वाली रोजा

हंगेरियन लोककथा

रोजा कहीं भी चढ़ सकती थी - पेड़ से लेकर ड्रेन-पाइप तक, वो कितनी भी ऊंचाई पर चढ़ सकती थी. वो एक तरह से ठीक भी था, क्योंकि उसकी सौतेली माँ और सौतेली बहन ने उसे छत पर सोने को मजबूर किया था. इसलिए, जब राजा ने अपने बेटे की शादी उस लड़की से करने का मन बनाया जो महल के बाहर उगने वाले विशाल पेड़ से कुछ बीज नीचे ला सके, तो रोजा वो परीक्षा लेने का फैसला किया ...

बहुत पहले, एक दूर के राज्य में एक बहुत विशाल पेड़ था. वो इतना ऊँचा था कि उसकी सबसे ऊँची शाखाएँ बादलों में छिपी हुई थीं. किसी ने पेड़ का ऊपर वाला हिस्सा कभी नहीं देखा था.

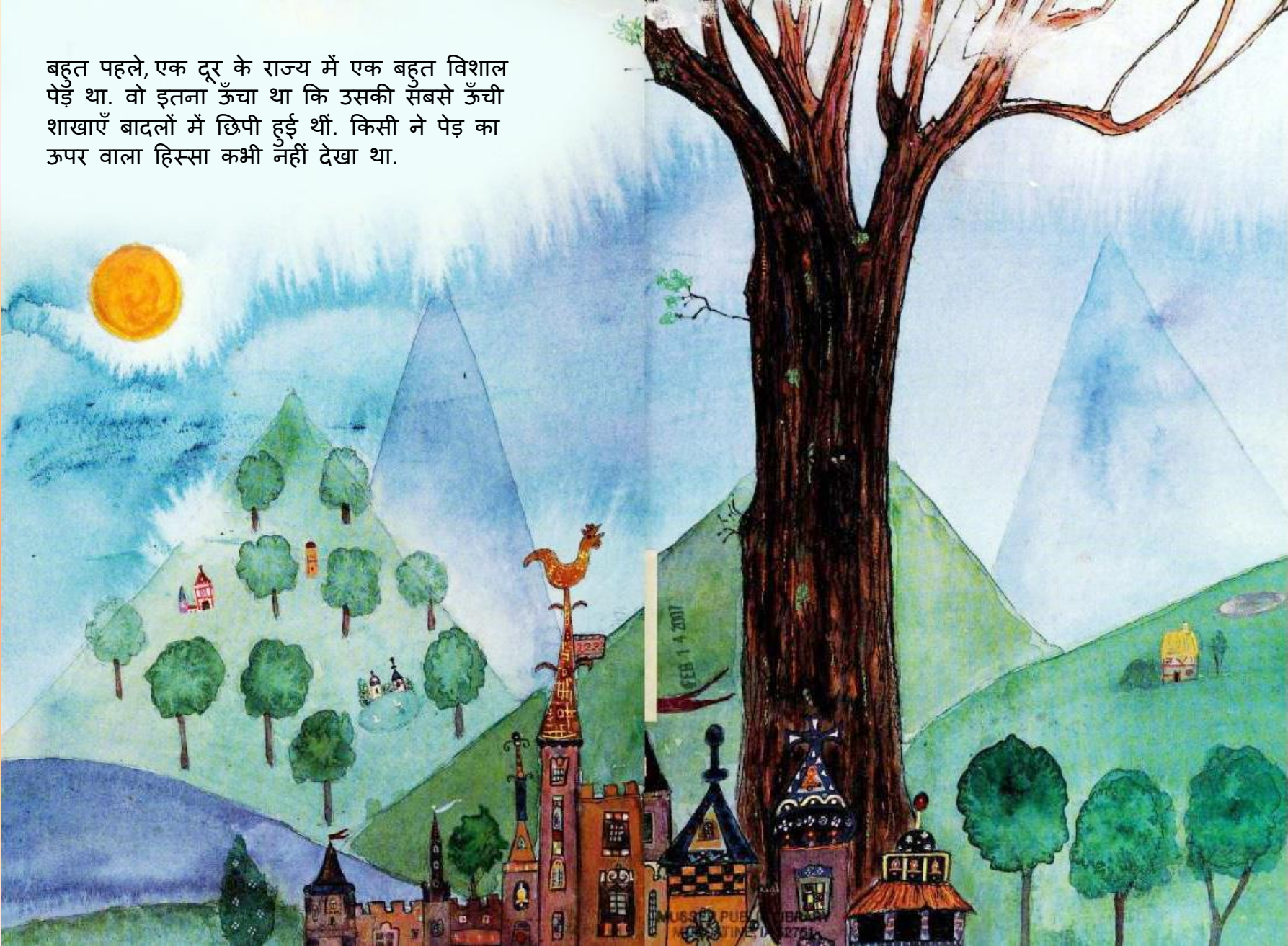

वो विशाल पेड़ की छाया में एक महल खड़ा था. वहाँ राजा का पुत्र एंड्रास दिन-रात किताबें पढ़ता रहता था. एक शाम, राजा ने कहा, "देखो, अब बहुत हो गया! तुम्हारे कारण मुझे मोमबत्तियों पर बहुत खर्चा करना पड़ रहा है. अगर तुम्हारी शादी हो जाए तो तुम्हारी पत्नी उस समस्या को सुलझा देगी."

"उसके लिए मैं एक प्रतियोगिता आयोजित करूंगा. जो लड़की हमारे पेड़ पर चढ़कर उसके कुछ बीज वापस लाएगी उसी बहादुर और चतुर लड़की के साथ तुम्हारी शादी होगी!"

कई लड़कियों ने कोशिश की.....

...पर वे सभी असफल रहीं.

उस प्रतियोगिता की खबर तेज़ी से पूरे राज्य में फैली और जैसे ही रोजा नाम की एक लड़की अपने बिस्तर पर चढ़ रही थी, उसने भी वो खबर सुनी.

रोजा कितनी भी ऊंचाई पर चढ़ सकती थी - वो ठीक भी था, क्योंकि उसकी सौतेली माँ और सौतेली बहन इरमा उसे छत पर सोने को मज़बूर करती थीं.

"तुम वो प्रतियोगिता जीत सकती हो, रोजा!" उसकी सौतेली माँ ने कहा. "तुम एक बंदरिया की तरह चढ़ती हो!"

"और तुम एक बंदरिया की तरह दिखती भी हो!" इरमा ने जोड़ा.

"तुम्हें देखते ही राजकुमार एक मील दौड़ेगा!"

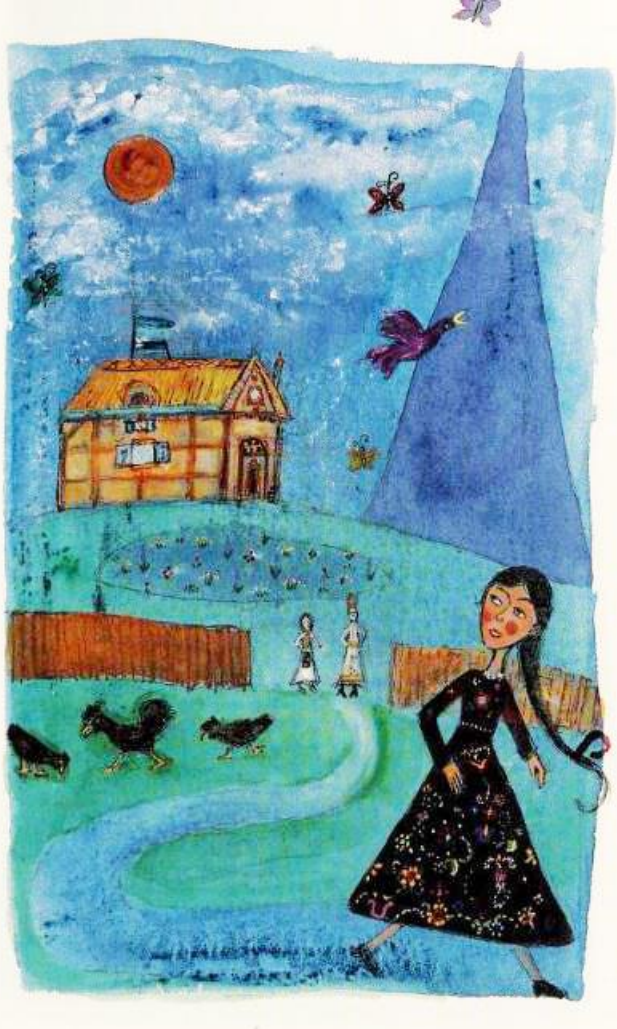

"और आप लोग कितने खूबसूरत हो?" रोजा ने सोचा. "बस आप लोगों से पिंड छुड़ाने के लिए ही मैं पेड़ पर चढ़ूँगी!"

"तुम भी उसके पीछे-पीछे जाओ, इरमा," उसकी माँ ने कहा.

"शायद वो तुम्हारे लिए एक भाग्यशाली दिन साबित हो!"

जब रोजा ने राजकुमार को देखा, तो उसे वो बहुत खूबसूरत लगा. एंड्रास ने अपनी किताब से मुंह उठाकर ऊपर देखा. "शायद यह प्रतियोगिता इतना बुरा विचार नहीं है," उसने सोचा.

रोजा चढ़ने लगी. "इस पेड़ का तना बहुत चिकना है," उसने कहा, "लेकिन मेरे घर के ड्रेन-पाइप की तुलना में यह फिर भी खुरदुरा है." उसे इस बात का एहसास नहीं था कि इरमा उसके पीछे-पीछे चढ़ रही थी.

वे चढ़ते गए और चढ़ते गए. अचानक, रोजा को लगा कि किसी ने उसे पकड़ लिया हो. बिचारी इरमा बुरी तरह से लटकी हुई थी.

"मुझे गिरने मत दो!" इरमा रोई.

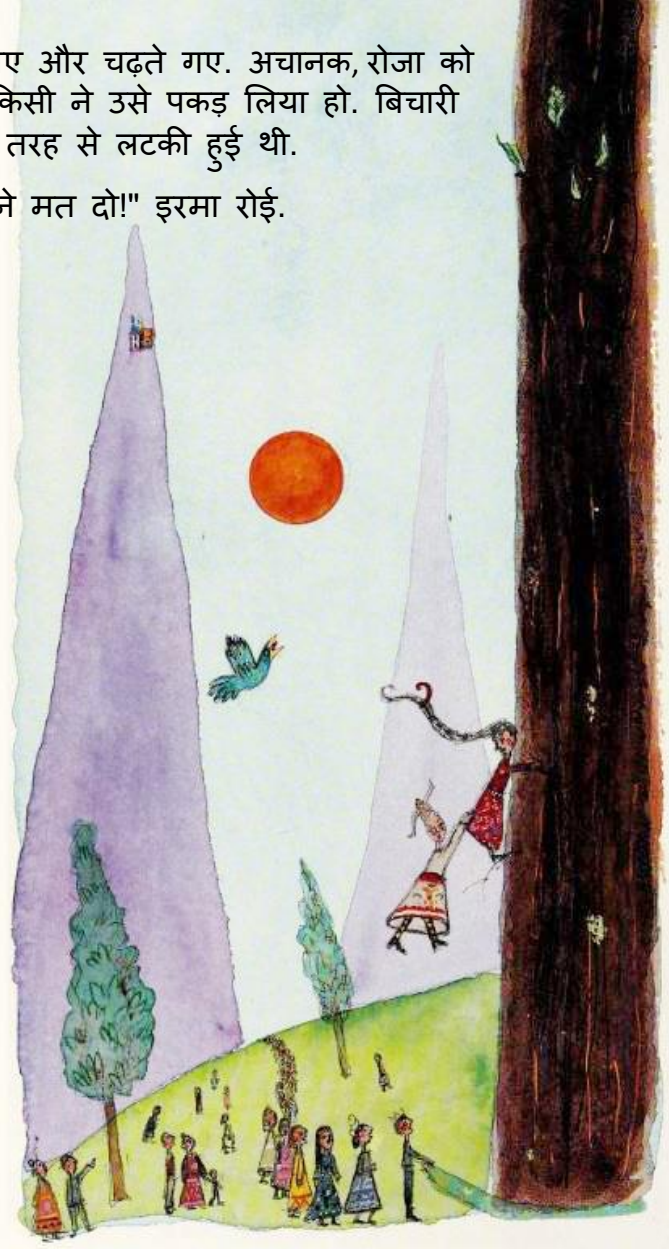

वो जितना ऊपर चढ़ रहे थे जमीन उनसे उतनी ही दूर होती जा रही थी.

"धक्का मत दो!" इरमा चिल्लाई, जब रोजा ने उसकी ऊपर चढ़ने में मदद की.

"ओह, कराहना बंद करो!" रोजा ने उससे कहा.

"वैसे मेरा पीछा करने के लिए तुम से किसने कहा था?"

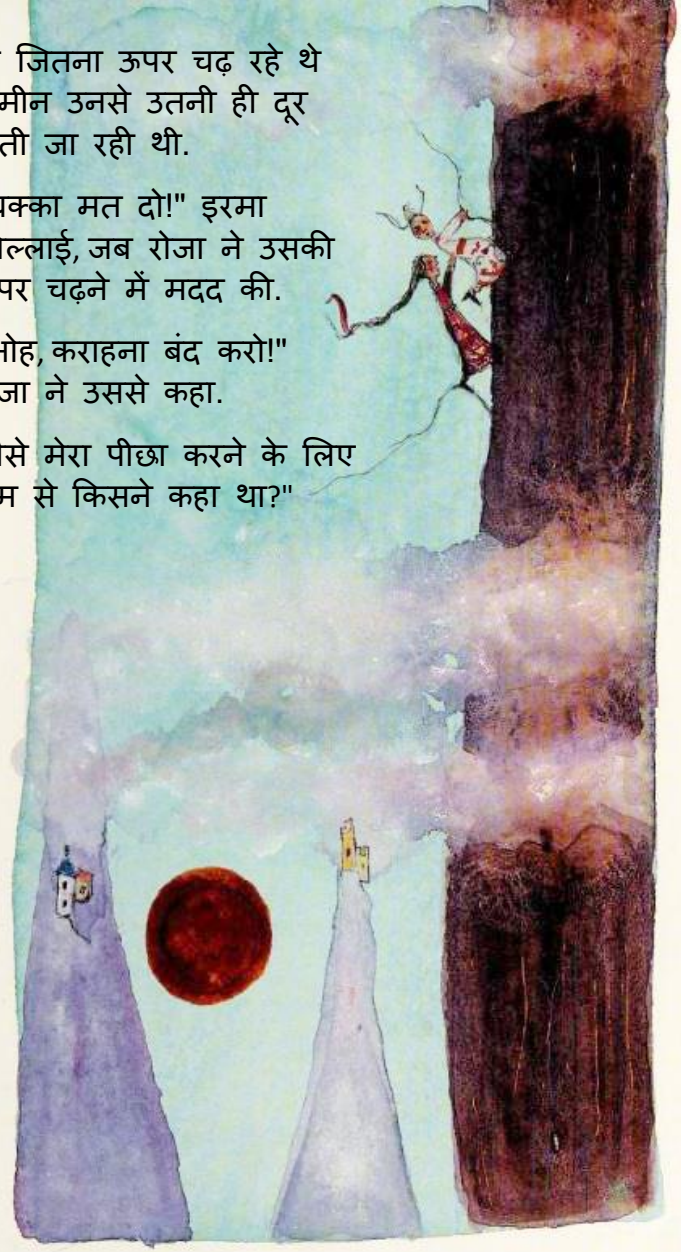

फिर वो और ऊपर और ऊपर चढ़ती गईं. जल्द ही रात हो गई.

"मुझे डर लग रहा है!" इरमा कराह उठी.

"चिंता मत करो," रोजा हँसी. "अगर कोई भूत तुम्हें देखेगा तो वो डर जाएगा!"

फिर भोर हुई.

वे ऊंचे और ऊंचे चढ़ती गईं, सूर्य की ओर.

अचानक रोजा को पके हुए बीजों से भरी एक फली दिखाई दी.

"मुझे कुछ बीज मिल गए हैं!" वो चिल्लाई.

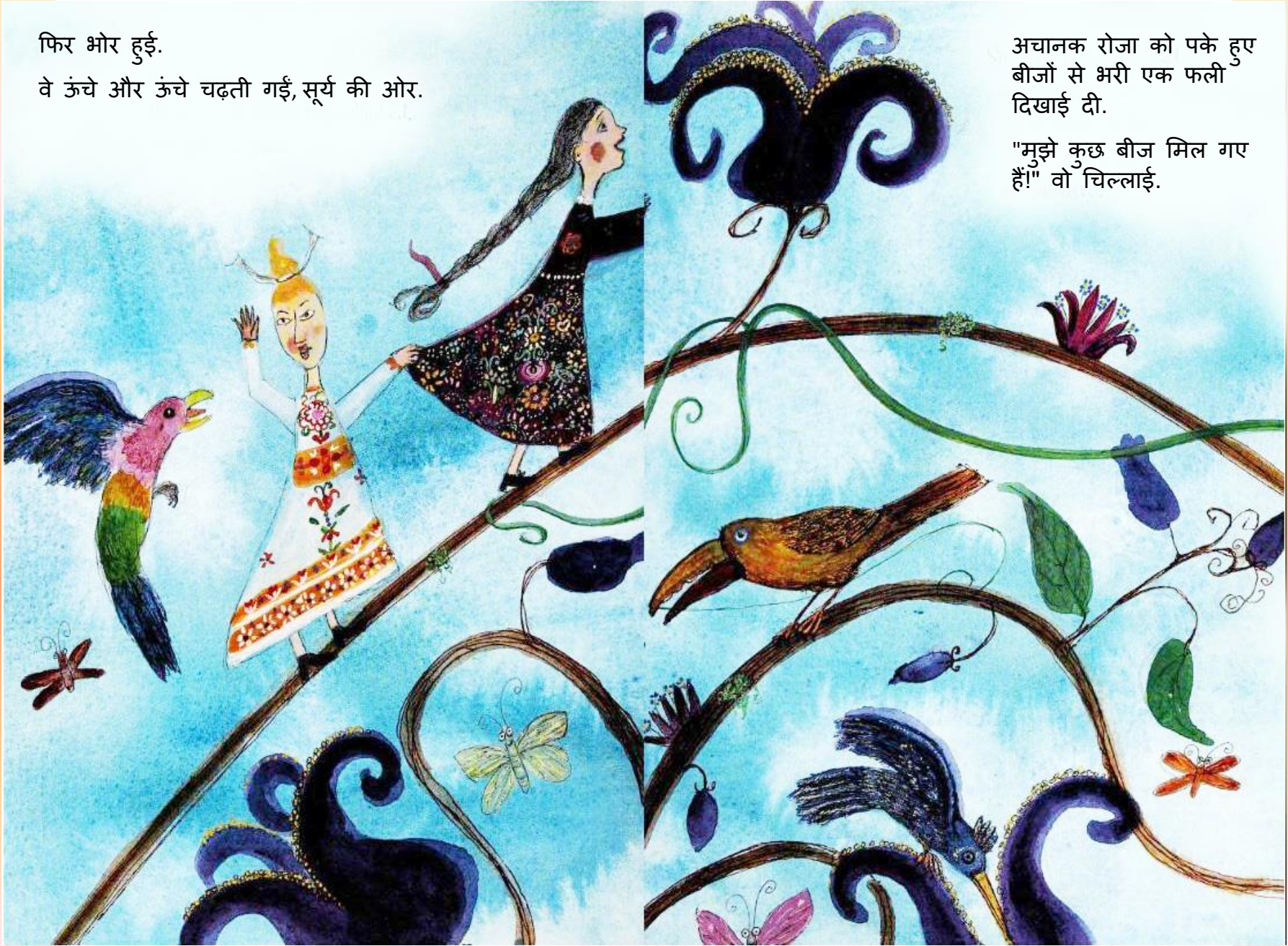

बहुत सावधानी से रोजा ने फली उठाई.
लेकिन इरमा ने उसके हाथ से वो फली छीन ली.
"धन्यवाद, अब मैं चली!" इरमा ने कहा.
और फिर इरमा ने उसने रोजा को पेड़ से गिरा दिया.

"अब मैं प्रतियोगिता कभी नहीं जीतूंगी!"
रोजा ने उदास होकर सोचा.

....जैसे ही वो नीचे गिरी....

....और नीचे....

....और नीचे....

... और अंत में एक दुर्घटना के साथ रोजा, राजकुमार के ठीक ऊपर आकार गिरी. राजकुमार नीचे बेसब्री से नीचे उसका इंतज़ार कर रहा था.

"क्या तुम्हें कोई बीज मिला?" राजकुमार ने रोजा को उठाते हुए उससे पूछा.

रोजा ने गुस्से में सिर हिलाया. "वो धोखेबाज़, मेरी सौतेली बहन..." वो गुस्से में चिल्लाई.....

परन्तु जब रोजा बातें कर रही थी, तो उसके बालों में फंसे कुछ बीज राजकुमार के पांव के पास जाकर गिर गए.

फिर रोजा ने राजकुमार से शादी की. शादी का जश्न हफ्तों तक चला.

जहाँ तक इरमा की बात है, वो अभी भी उस पेड़ पर अटकी हुई है.

"शायद मैं किसी दिन जाकर उसे वहां से छुड़ाऊंगी..." रोजा ने एंड्रास से कहा.

"लेकिन अभी नहीं."